Purva Mimaansa
A Multi-discipinary Bi-annual Research Journal
(Double Blind Peer Reviewed)

Vol. 9 No. 1-2, March-Sep. 2018
ISSN : 0976-0237
UGC Approved Journal No. 40903

चचवंशमहाकाव्य में औदात्य

डॉ.अरुण कुमार आचार्य

सरांश–

काव्य मानव के कोमल मन की भाव स्थली से उद्भुत उदार, उदात्त एवं उज्ज्वल भावों की अनुभूति का विषय है। काव्य और मानवीय जीवन का अत्यधिक गहरा सम्बन्ध रहा है। मानव द्वारा की गई अनुभूति और अभिव्यक्ति का मणि–कांचन योग जब वाणी के माध्यम से अपना चमत्कार प्रदर्शित करता है तब वह वाङ्मय कहलाता है। वैदिककाल से लेकर आज तक संस्कृत वाङ्मय की धारा अजस्र गति से प्रवाहित हो रही है। महाकाव्य प्रवाह की इस परम्परा में सिन्धुदेश के मूलनिवासी श्री रामचन्द्र (हरिशरण) अम्बिकादत्त शाण्डिल्य सृजित ऐतिहासिक व चरित महाकाव्य 'चचवंशमहाकाव्य' अपना स्थान सर्वोपरि रखता है। सिन्धु देश (वर्तमान पाकिस्तान में) के छठी–सातवीं शताब्दी के ऐतिहासिक चचवंश की सत्य घटना को आधार बनाकर रचे गए इस एकमात्र महाकाव्य में उदात्त भावों का समग्र दृष्टि से अध्ययन करने पर हम पाते हैं कि यह महाकाव्य हमारे तत्कालीन भारत के समृद्ध वैभव और आदर्श जीवन मूल्यों की उदात्तता की महत्ता का दर्शन कराता है जो इस्लामिक हमलावरों के कारण नष्ट प्रायः सी हो गई थी। जैसा कि कहा है– –'**स्वर्गीयदास्य सुखतो नरके प्रभुत्वं मन्ये वरं न खलु वैरिवंशवदत्वम्**'।

काव्यक्षेत्र में जब कोई विचार अथवा किसी चरित्र का चारित्र्य अपने उन्मेश की चरम सीमा की ओर अग्रसर होता है तो वह औदात्य का अधिकारी होता है। ग्रीक आचार्य लांजाइनस **'उदात्त'** तत्त्व को महाकाव्य का प्राण मानते हैं[1]। कान्ट व हीगल के अनुसार भी अद्वितीय महत्ता के प्रतिपादक उदात्त तत्त्वों के अभाव में काव्य निस्तेज ही होता है। यद्यपि भारतीय साहित्य मनीषियों ने अपने लक्षणों में इस शब्द का सन्निवेश तो नहीं किया किन्तु संस्कृत का सम्पूर्ण साहित्य इस दृष्टि से पूर्ण समृद्ध है। वास्तव में औदात्यपूर्ण साहित्य ही विशुद्ध प्रेम, उत्कृष्ट त्याग तथा महान् उद्देश्य की प्राप्ति के लिए अपने पाठकों को अभिप्रेरित कर सकता है।

प्राचार्य रामचन्द्र हरिश्शरण अम्बिकादत्त शाण्डिल्य द्वारा सिन्धु देश (वर्तमान पाकिस्तान में) के छठी–सातवीं शताब्दी की ऐतिहासिक सत्य घटना को आधार बनाकर रचे गए एकमात्र महाकाव्य चचवंश महाकाव्य का समग्र दृष्टि से अध्ययन करने पर हम यही पाते हैं कि यह रचना अपने पात्रों के चरित्र विकास, भाषा की प्रांजलता, भावों एवं विचारों की उत्कृष्टता तथा आदर्श जीवन मूल्यों की महत्ता आदि सभी दृष्टियों से एक उत्कृष्ट उदात्त काव्य रचना है।

चचवंश महाकाव्य में अनेक ऐसे पात्र मिलते हैं जो कि अपने चरित्र की अमर छाप पाठकों के मानस पर छोड़ते हैं जैसा कि द्वितीय सर्ग में राजा रायसहासी द्वितीय की प्राणरक्षा एक कन्या

वार्ड नं.06, सरस्वती कन्या महाविद्यालय के समीप, तारानगर (चूरु) राजस्थान PIN.331304

Vol. 9 No. 1-2, March-Sep. 2018
ISSN : 0976-0237
UGC Approved Journal No. 40903

द्वारा की जाती है तो राजा के मन में उसके प्रति कृतज्ञता का जो भाव फलित होता है[2]। वहां एक राजा का उसके प्राणों की रक्षा करने वाली स्त्री के प्रति श्रद्धा से, कृतज्ञता से गद्–गद् हो जाना उसके चरित्र की उदात्तता के अतिरिक्त और क्या प्रकट करता है?

इसी तरह षष्ठ सर्ग में राजा चन्द्र के चरित्र के अनेक पक्ष देखने को मिलते हैं। राजा चन्द्र का अपनी संस्कृति के प्रति मोह दिखाई देता है। इसलिए उन्होंने संस्कृत भाषारूपी वृक्ष को बढाने के लिए विद्वानों की सभाओं का आयोजन करवाया[3] तथा विद्वानों को पुरस्कार व प्रमाणपत्र प्रदान किए[4]। एक आदर्श राजा के रूप में राजा चन्द्र दिन–रात प्रजा के हितकारी कार्यों में संलग्न रहकर पेड़ लगाने, नदी तालाबों का निर्माण करवाने नहर बनवाने आदि अनेक कार्य किए[5]। उस राजा चन्द्र ने सांसारिक भोगों से दूर रहकर आत्मिक उन्नति को अपने जीवन का लक्ष्य बनाया। इसलिए वह भगवद् भक्ति के द्वारा ही मोक्ष के लिए तत्पर हुआ फिर भी सिन्धु नरेश चन्द्रदत्त का मानना था कि एक राजा के लिए सर्वांश में अहिंसा को अपनाना अत्यधिक घातक होता है[6] जिससे देश का विनाश ही होता है। चन्द्रदत्त के चरित्र को देखने से प्रतीत होता है कि उसकी दृष्टि में संसार असार है और जीवन का परम ध्येय मोक्ष है। अतः अन्य दर्शनों के मर्म को बताकर वैदिक धर्म की श्रेष्ठता का प्रतिपादन भी राजा चन्द्र द्वारा किया गया है–

क्वचास्ति चार्वाकमतेऽर्थसत्यता?क्व जैनतत्त्वे परमार्थतोचिताद्य।
क्व बौद्धधर्मे प्रतिभाति शूरता?श्रुतेर्मतं शाश्वतसौख्यसङ्तम् ।।[7]
न खिस्तधर्मेऽपि च तात्त्विकी स्थितिर्न तत्र वैज्ञानिकभावगूढता।
भवन्ति तस्माद् बहुवर्णसंकराः सनातनाध्वामेनिभिःप्रशंसितः।।[8]

सिन्धु राज राजा चन्द्रदत्त को जब जीवन के वास्तविक स्वरूप का, यथार्थता का ज्ञान हो गया तो वह कह उठता है कि–

मधुप्रलुब्धा न जहाति मक्षिका,न जातु भृंगो जलजं जिहासति।
तथैव मोहासवमत्तमानसो, न मानवः कालगतिं निरीक्षते।।[9]

ऐसी ही उदात्तता के दर्शन हमें चतुर्थ सर्ग में प्राप्त होते हैं। सिन्धु नरेश का विप्र प्रधानमन्त्री चच (यज्ञदत्त) का चरित्र हिमगिरि के समान अचल संयमी है। उनका यह चरित्र युवाओं के लिए प्रेरणास्पद है। सिन्धु नरेश की महारानी के प्रणय निवेदन करने पर भी उसने अपना धर्माचरण नहीं खोया और राजा के प्रति अपनी स्वामिभक्ति बनाए रखी –

कामातुरां तां सचिवेऽप्यवादीच्चेष्टा त्वदीया कुपथे प्रवृत्ता।
त्वत्सेवकोऽहं नहि वंचकोऽस्मि चारित्र्यहीनः खलु नाशमेति।।[10]
त्वां प्रार्थये देवि! पुनः कदापि नामन्त्रय त्वं निजकार्यसिद्धये।
न स्वामिभार्याऽनूचरेण भोग्या सनातनोऽयं मनुनोक्तधर्मः।।[11]

इसी सर्ग में विधवा विवाह के बारे में बताया है जो कि प्रत्येक काल में सामाजिक व परिस्थिति की प्रासंगिक उदात्तता है।[12] क्योंकि ऋग्वेद के दशम मण्डल में भी विधवा विवाह की ओर स्पष्ट संकेत करते हुए कहा है कि –**''उदीर्ष्व नार्यभिजीवलोकं गतासुमेतमुप शेष एहि''** अर्थात् हे नारी! तुम इस मृत पति की आशा छोड़कर जीवित में दूसरा पति प्राप्त करो।[13]

महाकाव्य के सप्तम सर्ग में हम देखते है कि महाकाव्य का नायक राजा दाहरसेन शत्रु के

Vol. 9 No. 1-2, March-Sep. 2018
ISSN : 0976-0237
UGC Approved Journal No. 40903

प्रति भी क्षमाभव रखता है साथ ही उसका शरणागत रक्षक व मातृप्रेम का उदात्त भाव भी दर्शनीय है। जब रसाल छल से दाहर को मारने का प्रयास करता है तब उसकी चालाकी राजा समझ जाता है और दोनों में युद्ध होता है। रसाल अन्त में उससे प्राणरक्षा की भीख मांगता है तो वह दाहरसेन अपने शत्रु को भी क्षमा कर देता है।[14] इसी प्रकार उसका भाई दहारसिंह भी जब उसे छल से मारना चाहता है तब सब कुछ जानते हुए भी उसने भाई को सम्मान दिया और उसकी मृत्यु के उपरान्त उसके राज्य का कुशलतापूर्वक संचालन किया–

गजेन्द्रमारुह्य तदेन्द्रवीर्यभृत्
समागतस्तन् निकटं चचात्मजः।
विलोक्य तं सौधसमीपमागतं
द्रुतं पपातावरजः स पादयोः।।[15]

महाकाव्य का नायक युद्ध की विभिषिका से परिचित है वह युद्व को व्यर्थ मानता है । इस प्रकार हमारे समक्ष अंहिसा व शांति का उदात्त भाव प्रस्तुत होता है–

धनप्रणाशो भवतीह सङगरे
व्यथार्दितो दुर्गतिमाप्स्यति प्रजा।
वृथा म्रियन्ते समरेषु सैनिका
हिताय तत् कस्य भवेन्नियोधनम्।।[16]

नायक की करुणाव उदारता से कलित हृदय हमें करुणभावों में आप्लावित करने वाला है। उसने जनहित के लिए कर माफ किए, साधारण कैदियों को भी जेल से रिहा किये–

मुक्तो राज्यकरो मुदा नृपतिना स्वोदारभावात् ततो,
मुक्ता बन्दिगृहाच्च बन्दिनिकरास्तत्रोत्यवोऽभून् महान्।
कीर्तिं प्राप्य महीतले सुविपुलां श्रद्धानिबन्धास्पदं,
सोऽयं सुष्ठु बभूव भूपतिवरः साम्राज्यसर्वेश्वरः।।[17]

महाकाव्य में महासचिव चच में भी **'जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसि'** की भावना कूट–कूट कर भरी है। चतुर्थ सर्ग में वह कहता है कि–

त्वादृङ्न राज्ये खलुकोऽपि शास्ता,स्वदेशरक्षाव्रतमेवधर्मः।
कुरुष्व तत्त्वं निजदेशसेवां,स्वर्गादपि श्रेष्ठपदं लभस्व।।[18]

महाकाव्य के नायक राजा दाहरसेन में भी अपने पिता महाराजा चच के समान देशप्रेम की भावना कूट–कूट कर भरी है। **'माता भूमिः पुत्रोऽहम् पृथिव्याः**[19]**'** इसी भाव से ओत–प्रोत राजा दाहरसेन जोकि मातृभूमि को माता के समान मानता है और उसके लिए सर्वस्व अर्पण की बात करता है। मातृभक्ति व मातृरक्षा का कितना उदात्त भाव पाठकों के सामने प्रस्तुत हुआ है–

स्वमातृभूमेस्तनयः प्रतापी
प्रज्वाल्य सम्यङ् निजवीर्यदीपम् ।
समाप्य यात्रां जगतः स्वकीयां
स्वर्गं प्रयातः स विमानचारी ।।[20]

Vol. 9 No. 1-2, March-Sep. 2018
ISSN : 0976-0237
UGC Approved Journal No. 40903

पत्नी के प्रति अनन्य प्रेम की उदात्तता हमें जयसिंह के चरित्र में देखने को मिलती है। राजा द्रुहर की बहिन ने जब विवाह का प्रस्ताव रखा तब उसने स्वयं को विवाहित कहकर उसको विवाह के लिए स्पष्ट मना कर दिया–

पुरा विवाहसूत्रेण बद्धोऽस्मि निजभार्यया।
अतो मां त्वं परित्यज्य पतिमन्यं वृणीष्व हि।।[21]

दाहरसे की पत्नी लाडी का व्यक्तित्व भी नारियों के लिए प्रेरणादायी है। सिन्धुदेश पर प्रथम मुस्लिम आक्रमण से उत्पन्न संकट के समय उसने सिन्धुदेश की स्त्रियों को जो जोश और जुनून भरा उद्‌बोधन दिया वह रोमांचित करने वाला था। उसने कहा कि– दुःख है कि हम अपने घरों में बैठी रहती हैं, मातृभूमि की कुछ भी सेवा नहीं करती हैं, विदेशी लोग हमारे आभूषण लूट कर ले जाते हैं, साथ ही हमारे धन व धर्म का हरण करते हैं, यदि आप में मातृभूमि की रक्षा करने का भाव है तो आप अपने आभूषण स्वेच्छा से उतार कर मातृभूमि की रक्षा के लिए अर्पण कर दें–

गेहे स्थिता हन्त! व्यं कथंचित् कुर्मो न सेवां नितमातृभूमेः।
लुण्ठन्ति सर्वाणि विभूषणानि विधर्मिणो धर्मधनं हरन्ति।।[22]
भवादृशीनां यदि वाऽभिलाषः,सेवां विधातुं निज जन्मभूमेः।
समर्प्य हर्षान्निजभूषणौघं,स्वदेशरक्षां फलितां कुरुदेवम्।।[23]
विधातुमिष्टा यदि राज्यरक्षा, दूरीकुरुध्वं तनुमण्डनानि।
त्यागं विना नो लभतेऽत्र कश्चिन्मानं धनं वा प्रभुतां च कीर्तिम्।।[24]

इस प्रकार महाकाव्य के चरित्रों के ये विचार कितने उच्च व मननीय है, इसके अतिरिक्त भी कवि ने काव्य के विभिन्न प्रसंगों को जीवन की जिन मार्मिक अनुभूतियों से परिदीप्त किया है, उनसे भी चचवंश महाकाव्य का औदात्य पक्ष विशिष्ट रूप से मुखरित हुआ है ।

गंभीर व उच्च विचारों पर आश्रित औदात्य के अतिरिक्त हम देखते हैं कि– चचवंश महाकाव्य में भाषा पर आधारित औदात्य भी अत्याकर्षक व उत्कृष्ट है। आलोच्य कृति में अनुप्रासों की रमणीयता और अन्य विविध अंलकारों से अलंकृति होने के साथ ही यह काव्य प्रसाद गुण सम्पन्न भी है। इसकी वाणी सदैव श्रवण माधुर्या, प्रसन्नया, सरलया, सह्रदया, ग्राहिण्या, वाण्या परम सरल प्रसन्न व ह्रदय ग्राह्य है ।

इस प्रकार हम देखते है कि औदात्य कृति चचवंश महाकाव्य में भावों का अपना विशिष्ट आकर्षण है तथा भाषा व अलंकार में सहज सरलता है। इसमें व्यक्त विचारों व उक्तियों के पठन व श्रवण से पाठक व श्रोता हठात् ही **'अहो विलक्षणम्' 'सर्वथा विलक्षणम् '** जैसे मनोभावों से स्वतः ही अभिभूत हो जाता है और यही स्थिति ही औदात्य है । अतः औदात्य की दृष्टि से प्राचार्य रामचन्द्र हरिश्शरण अम्बिकादत्त शाण्डिल्य द्वारा रचित यह ऐतिहासिक चचवंश महाकाव्य एक सफल रचना है ।

---

1. **पाश्चात्य काव्यशास्त्र, डॉ.भागीरथ मिश्र, वि.वि. प्रकाशन वाराणसी,सन् 1999,पृ.14–15**
2. **चचवंश महाकाव्य सर्ग 2.37–38**

Vol. 9 No. 1-2, March-Sep. 2018
ISSN : 0976-0237
UGC Approved Journal No. 40903

3. वही **6.3**
4. वही **6.4**
5. वही **6.5–6**
6. वही **6.12**
7. वही **6.14**
8. वही **6.15**
9. वही **6.10**
10. वही **4.46**
11. वही **4.47**
12. वही **4.66–67**
13. ऋग्वेद **10.18.8**
14. चचवंश महाकाव्य सर्ग **6.39**
15. वही **6.55**
16. वही **6.58**
17. वही **7.9**
18. वही **4.59**
19. अथर्ववेद **12.01.12**
20. वही **16.73**
21. वही **12.32**
22. वही **13.20**
23. वही **13.21**
24. वही **13.23**